पूर्ण पाठ · निःशुल्क PDF

दुर्गा चालीसा

दोहा · चालीसा · समापन दोहा

Vista Hub · vhoriginal.com
साफ टाइप · प्रिंट के लिए तैयार

कैसे पढ़ें

भक्ति पाठ सहायता

शांत स्थान पर बैठें। दीप या धूप वैकल्पिक है। मन एकाग्र कर माँ दुर्गा का स्मरण करें।

पहले दोहा, फिर चालीसा की चालीस चौपाई, अंत में समापन दोहा। स्वर स्पष्ट रखें; जल्दबाजी न करें।

नवरात्रि, मंगलवार या शुक्रवार की सुबह/संध्या घर की रीति से चुनें। एक बार पूरा पाठ पर्याप्त है; परिवार की परंपरा ७ या ११ बार हो तो उसी से चलें।

श्रद्धा शांत रहे — जबरदस्ती का नियम नहीं।

श्रद्धा नोट

यह **भक्ति पाठ सहायता** है — घर की पूजा-पाठ के लिए स्वयं टाइप किया गया पारंपरिक लोक-पाठ।

आधिकारिक मंदिर प्रकाशन नहीं। किसी प्रकाशक की स्कैन या कॉपी नहीं। तिथि/रीति पंचांग व परिवार से बदल सकती है। चिकित्सा, कानूनी सलाह या फल की गारंटी नहीं। Vista Hub · vhoriginal.com

दोहा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी। नमो नमो अम्बे दुःख हरनी॥

निरंकार है ज्योति अम्बाजी। तुम सब जग की प्रकाश भई॥

चौपाई

1–8

जग जननी जय जय जगदम्बे। सकल सृष्टि की तुम ही अम्बे॥

तुम ही हो जग की ज्योति प्रकाश। तुम ही हो सकल सृष्टि की आश॥

तुम ही हो कल्याण की खान। तुम ही हो सब की माता महान॥

तुम ही हो सृष्टि की रचनाहारी। तुम ही हो पालन की अधिकारी॥

तुम ही हो संहार की शक्ति। तुम ही हो त्रिगुण की भक्ति॥

तुम ही हो ब्रह्मा विष्णु शंकर। तुम ही हो शक्ति रूप निरंतर॥

तुम ही हो गौरी पार्वती। तुम ही हो दुर्गा महेश्वरी॥

तुम ही हो काली भयनाशिनी। तुम ही हो अम्बे दुःखनाशिनी॥

चौपाई (जारी)

9–16

तुम ही हो लक्ष्मी वैष्णवी। तुम ही हो सरस्वती वाग्देवी॥

तुम ही हो चंडी चामुण्डा। तुम ही हो असुर संहारिणी॥

तुम ही हो सिंहवाहिनी माता। तुम ही हो महिषासुर घाता॥

तुम ही हो शुम्भ निशुम्भ हारी। तुम ही हो रक्तबीज संहारी॥

तुम ही हो मधु कैटभ नाशिनी। तुम ही हो धूम्रलोचन घातिनी॥

तुम ही हो चण्ड मुण्ड विनाशिनी। तुम ही हो निशुम्भ शुम्भ घातिनी॥

तुम ही हो नव दुर्गा स्वरूपा। तुम ही हो शक्ति महा अनूपा॥

शैलपुत्री ब्रह्मचारिणी देवी। चंद्रघंटा कुष्मांडा सेवी॥

चौपाई (जारी)

17–24

स्कंदमाता कात्यायनी। कालरात्रि महागौरी॥

सिद्धिदात्री नव रूप नाम। इनका ध्यान करहु मन राम॥

जो नर नारी ध्यान लगावें। ताके सब संकट मिट जावें॥

रोग शोक दारिद्र्य नसावें। सुख सम्पत्ति घर में आवें॥

पुत्र पौत्र यश कीर्ति बढ़ै। मनवांछित फल शीघ्र लहै॥

जो यह चालीसा पढ़े पढ़ावै। दुर्गा माँ कृपा दृष्टि पावै॥

संकट कटे मिटे सब पीरा। सुख सम्पत्ति घर आवै नीरा॥

जो कोई पाठ करे मन लाई। तापर कृपा रहे अम्बे माई॥

चौपाई (जारी)

25–32

नवरात्रि में जो पाठ करावै। इच्छा पूरी अम्बा करवावै॥

मंगलवार शुक्रवार विशेष। पाठ करे तो मिले अशेष॥

दीप धूप फूल चढ़ावै। मन की कामना पूर्ण करावै॥

सत्य वचन दृढ़ विश्वास। पाठ करे तो मिले आश॥

भक्तन की रक्षा करो माता। संकट हरि सुख दे दाता॥

दुष्ट दलन करो जगदम्बे। भक्तन के दुख हरि अम्बे॥

जय जय जय जगदम्ब भवानी। जय दुर्गे जय जय कल्याणी॥

जय अम्बे जय जय जगमाता। दुख हरि सुख दे जगत्राता॥

चौपाई (जारी)

33–40

शरण पड़े जो तेरी माता। ताके कष्ट मिटें सब त्राता॥

करुणा दृष्टि करो महारानी। भक्तन पर रहो हितकारिणी॥

जय दुर्गे जय जय जगदम्बे। जय भवानी जय जय अम्बे॥

जय काली जय जय चामुण्डा। जय अम्बे जय जय मुण्डा॥

जय सिंहवाहिनी महारानी। जय महिषासुरमर्दिनी॥

जय शुम्भ निशुम्भ विनाशिनी। जय रक्तबीज भक्षणी॥

जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बन्धन महा सुख होई॥

जो यह पढ़ै दुर्गा चालीसा। पावै कृपा माता गौरीसा॥

दोहा

दुर्गा जपत निशदिन जो कोई। ताके निकट न आवै कोई॥

भक्तन को सुख सम्पत्ति देई। दुर्गा माँ सब दुख हर लेई॥

॥ दुर्गा चालीसा समाप्त ॥

यह पाठ स्वयं टाइप किया गया है · भक्ति पाठ सहायता · आधिकारिक मंदिर प्रकाशन नहीं · Vista Hub